गुरुवार, 25 नवंबर

प्रवाह

बिट्स में बहती ख़बरों की धारा

—हिन्दी प्रेस क्लब प्रस्तुति

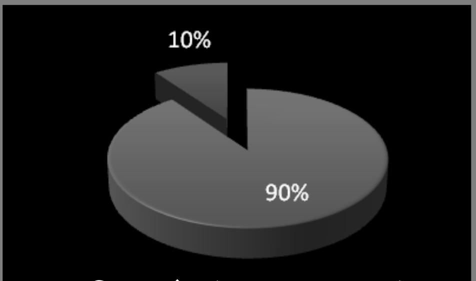

90 प्रतिशत अंडरग्रेजुएट छात्र कम से कम एक जॉब ऑफ़र पाने में सफल रहे |

प्लेसमेंट - एक नज़र में

क्षेत्र	प्रमुख कंपनियाँ	औसत पैकेज(लगभग) (लाख/प्रतिवर्ष)
आई. टी.	फेसबुक, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, डी शॉ, ऑरेकल, याहू, मोर्गन स्टेनली	8.75
इन्फ्रास्ट्रक्चर	मिडमैक, सिंप्लेक्स, पुंज लॉयड, एल एन् टी	3.5
केमिकल	श्ल्मबर्जर, यू.ओ.पी.,एक्सोन मोबिल, रिलाइंस, बी.ओ.सी.	5
कंसल्टेंसी	म्यू सिगमा, सैब्रे होल्डिंग्स, एपेक्स डिसीज़ंस, यू.बी.एस., ई वैल्यू सर्व	6.5
इलेक्ट्रोनिक्स	एनवीडिया, सिस्को, कॉस्मिक सर्किट्स, फिलिप्स, टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स	6.75
मैकेनिकल	महिंद्रा, भेल, टाटा मोटर्स, जी ई, बी.ओ.सी.	4.75
फॉर्मेसी	डॉ.रेड्डी, काईनेप्स	3.25

छात्रों की संख्या (लगभग) (अंडरग्रेजुएट)

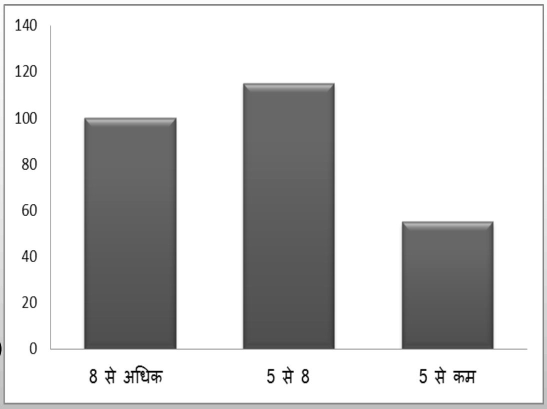

पैकेज (लाख/प्रतिवर्ष)

- **एम.ई.** में जहाँ कंप्यूटर साइंस, सॉफ्टवेयर सिस्टम्स, माइक्रो इलेक्ट्रोनिक्स से लगभग सभी छात्रों को ऑफर मिल चुके हैं वहीं बाकी संकायों का प्लेसमेंट उतना अच्छा नहीं रहा |
- डी शॉ ने 12.8 लाख – भारत में सर्वाधिक पैकेज प्रदान किया| फेसबुक की चयन प्रक्रिया 29 व 30 नवंबर को होगी |
- श्लम्बर्जर का पैकेज पोस्टिंग की जगह पर निर्भर करेगा |

हिन्दी प्रेस परिवार

लोकेश, आलोक, उज्ज्वल, सौरभ, कुलदीप |

नितीश, किशन, विकल्प, निमिष, अर्पिता, सुरभि, स्वाति, रोहन, प्रतीक |

सुमित, निशांक, रोहित, अनुजा, संकल्प, नीतिश, मृगांक, राहुल, विकास, अनमोल, पूजा, धनंजय, कजरी, अभिनव, दिनेश, नेहा, सिद्धांत |

गौरव, हर्षित, श्रेय, अभिलेख, जतिन, गौतम, प्रकाश, ऋषभ, सुचिता, अंशुल, |

गोविन्दम – गौतम

एच.पी.सी -प्रेसीडेंट बनने के बाद इस सेमेस्टर आपका अनुभव कैसा रहा?

गोविन्दम -इस सेमेस्टर मेरा अनुभव काफ़ी अच्छा रहा | ओएसिस और बॅासम का अनुभव काफी बढ़िया रहा | इस बार काम काफ़ी ज्यादा था पर सभी ने काम पूरी मेहनत से किया |

एच.पी.सी- आपने चुनावी वादों को पूरा करने की दिशा में क्या कदम उठाए हैं?

गोविन्दम- पेस्ट कंट्रोल के लिए इंस्टी की तरफ से स्वीकृति मिल गई है| लैपटॉप के बारे मे डेल से बातचीत चल रही है| स्टूडियो के अलावा बाकी मॉडलों पर छूट मिल रही है | रैफ का अगले सेमेस्टर से आधुनिकीकरण कर दिया जाएगा|

एच.पी.सी- अगले सेमेस्टर के लिए क्या योजनाएं हैं?

गोविन्दम- हमें मेनिफेस्टो के वादों को क्रियान्वित करना है| एस-9 के नवीनीकरण की बात इंस्टी से चल रही है| यूको बैंक से नयी ए.टी.एम लाने के बारे मे बात चल रही है| आशा है कि जल्द ही आपको इंस्टी मे कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे | हमनें ई.पी.सी और एच.पी.सी के न्यूज़लेटर्स के लिए एफ.डी के पास बॉक्स लगाने की भी योजना बना रखी है |

एच.पी.सी- इस बार एच-रेप्स की भूमिका कैसी रही है ?

गोविन्दम- सभी एच-रेप्स अपने भवनों के लिए अच्छा काम कर रहे हैं | कुछ ने वेबसाइट पर काम किया है | सभी से अच्छा सहयोग मिल रहा है मगर द्वितीय वर्ष के एच-रेप्स ज्यादा सक्रियता से काम कर रहे हैं |

एच.पी.सी- यूनियन काउन्सिल इस बार क्या बदलाव ला रही है ?

गोविन्दम- कुछ क्लब जैसे रेडियोएक्टिव, वॉलस्ट्रीट और गुरुकुल को यूनियन के अंतर्गत लाने की तैयारी चल रही है| स्टूडेंट यूनियन की वेबसाइट की एक टीम बनायी गयी है जो टी-शर्ट साइनिंग का काम देखेगी |

हमें तलाश है उन छुपे हुए भावों की जिन्हें आपकी कलम की आवश्यकता है |अपने शब्दों को दीजिए ताकत वाणी के साथ | **बिट्स की वार्षिक हिंदी पत्रिका— "वाणी" के लिए हमें अपनी कहानी, कवितायें, हास्य-व्यंग्य, पेंटिंग्स, कार्टून्स तथा हर प्रकार के साहित्य से सम्बंधित हिंदी रचनायें हमें भेजें—** hindipressclub@gmail.com **पर** , या दें अपने निकटतम HPC सदस्य को | *10 जनवरी* से पहले |

एम्ब्रयो टॉक

एम्ब्रयो क्लब द्वारा 15 नवम्बर को LTC में 'Singlet Exciton Fission in Organic Photovoltaics' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया | इसकी मुख्य वक्ता 1987 बैच की "प्रिया जाधव" थीं | उन्होंने बोस्टन यूनिवर्सिटी से M.S. किया तथा वर्तमान में वे M.I.T में पी.एच.डी. कर रही हैं | उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा इस विषय पर चर्चा की | इसमें लगभग 60 स्टूडेंट व 6-7 फेकल्टी सदस्यों ने भाग लिया | काफी रोचक तथा ज्ञानवर्धक होने के कारण यह लेक्चर एक घंटे के अपने निर्धारित समय से आधा घंटा और खिंच गया | मुख्य वक्ता ने भी इसका पूरा आनंद लिया तथा जनता के सभी सवालों के जवाब दिए | जनता ने इस लेक्चर की काफी सराहना की तथा आशा की कि आगे भी ऐसे ही और टॉक आयोजित कराये जाएँ |

एच.पी.सी – जेन-सेक बनने के बाद इस सेमेस्टर आपका अनुभव कैसा रहा?

गौतम – इस सेमेस्टर मेरा अनुभव काफ़ी अलग रहा | बॉसम, ओएसिस तथा बिट्स के सभी पहलुओं को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर मिला |

एच.पी.सी – मैनिफेस्टो में किये गए वादों को पूरे करने की दिशा में आपने कितनी प्रगति की है ?

गौतम – मैनिफेस्टो के सभी वादों पर काम काफ़ी हद तक हो चुका था | मगर इसी दौरान एस.डब्लू.डी. डीन बदल गए | नए डीन की कार्यशैली अलग होने के कारण हमें सभी कार्यों को नए तरीकों से अंजाम देना होगा | मगर सारे कार्य जल्द से जल्द पूरे कर लिए जायेंगे |

एच.पी.सी- मीरा भवन के टाइमिंग्स बढ़ाने की व एम.बी. में रेड़ी खुलवाने की योजना कहाँ तक सफल हो सकी है?

गौतम – हमने इस सम्बन्ध में डीन एस.डब्लू.डी. से बातचीत की मगर उनके अनुसार प्रायवेट रेड़ी की जगह इंस्टी की सहायता से ही एक कैंटीन की स्थापना करना ज़्यादा उचित होगा | मीरा भवन के टाइमिंग्स बढ़ाने की अनुमति के लिए हम बात कर रहे हैं |

एच.पी.सी – अपोजी की तैयारियों के बारे में कुछ बतायें ?

गौतम – अपोजी की तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी हैं | मुख्य अतिथि की खोज अभी से शुरू कर दी गयी है | इस बार अपोजी में इंडस्ट्रियल प्रॉब्लम स्टेटमेंट शामिल किये गयें हैं जिसमें इंडस्ट्री द्वारा अपनी समस्याओं से संबन्धित सवाल पूछे जायेंगे और उनका हल करने वाले विद्यार्थियों को इंडस्ट्री द्वारा पुरस्कार या वहाँ इंटर्नशिप करने का सुनहरा अवसर मिलेगा |

एच.पी.सी – धन्यवाद !! हम आशा करते हैं कि आप अपने सभी वादे पूरे करने में जल्द से जल्द सफल हों |

ट्यूरिंग टॉक्स

शुक्रवार से रविवार लेक्चर थिएटर में कंप्यूटर विज्ञान संगठन द्वारा आयोजित लेक्चर श्रंखला "ट्यूरिंग टॉक्स" का आयोजन हुआ | प्रथम लेक्चर का विषय "जीव विज्ञान प्रोत्साहित कंप्यूटिंग" था अर्थात् जीव विज्ञान को कंप्यूटर विज्ञान के साथ जोड़ना | इस विषय को M.E. कर रहे छात्र प्रशांत भट्टाचार्य ने संबोधित किया | उन्होंने बताया कि प्रकृति मे जितने भी परिवर्तन हो रहे हैं उनसे हम कंप्यूटर विज्ञान की दिशा में कैसे आगे बढ़ सकते हैं | उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण भी दिये जिनमें से तीन प्रमुख थे - GSWORM OPTIMIZATION से टोक्यो शहर का विकास प्राधिकरण, किंगफिशर पंछी की सहायता से जापान बुलेट ट्रेन मे दाब अनुकूलन, तथा FLAGELLA के सहायता से विश्व की अधिकतम क्षमता वाला मोटर यंत्र | इसके साथ ही उन्होंने दो वीडियो भी प्रदर्शित किये जो कि मधुमक्खी और चींटी की क्रियाओं से सम्बंधित थे |

20 नवम्बर को आयोजित लेक्चर का विषय था "नेटवर्क कोडिंग" | कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री विनीत पांडे थे | कार्यक्रम का मुख्य मकसद गणित की महत्ता और नेटवर्क कोडिंग में बढते उपयोग को दर्शाना था | उन्होंने Finite Fields के अध्याय के कोडिंग में प्रभावशाली इस्तेमाल पर जानकारी दी |

प्रिय साथियों,

रात के अँधेरे को सवेरे के प्रकाश में ढलते हुए, या एक पौधे को वृक्ष में बदलते हुए शायद ही किसी ने देखा होगा| कुछ बातों के होने का एहसास विदित ही नहीं होता| उसी प्रकार जीवन के ये साढ़े तीन वर्ष कब अंत होने को आ गए.. यह तभी पता चल रहा है, जबकि अंत सामने है| भले ही यह अंत कुछ के लिए आशा के अनुरूप न हो, पर यह तो आपके ऊपर है कि आप किसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं, अंत को, मंजिल को, या फिर उस सफ़र को, जो आपने यहाँ तक पहुँचने में तय किया है| शायद बहुत से लोग इस बात से सहमत न हों, पर आखिर वह सफर ही है जो कि यादों के रूप में हमेशा साथ रह जाता है| जिसे हम इतने लंबे वक्त तक जीते हैं और जिसके बीत जाने पर उसकी छोटी छोटी बातों का स्मरण करके खुश होते हैं| सच आज यही इच्छा होती है कि काश डम्बलडोर की तरह ही अपनी यादों को सफ़ेद धुएँ के रूप में कहीं कैद करके रख सकते... जिसे जब चाहे तब देख सकते ..या फिर एक्शन रीप्ले कर उन सभी लम्हों को फिर से जी सकते !!!

पर ऑडी में म्यूजिक क्लब के गीत गुडबॉय के अंत के साथ ही यह एहसास हो गया था कि संभवतः यह आखिरी बार है –- जब हम इस प्रकार बेफिक्र होकर इस ऑडिटोरियम में झूम रहे हैं| ऑडी, सैक, एंक, फ़ूडकिंग, आई.सी, कनॉट, शिवगंगा, स्काई, ..ये शब्द जो बाहरी दुनिया के लिए शायद कुछ भी नहीं होंगे, हमारे लिए कितने कुछ हैं| सच ही है ना, इन चंद वर्षों में अपनी सारी ज़िंदगी इन्ही के इर्दगिर्द ही तो रहती है| हम में से कई के लिए यह पहला अवसर होता है, जब हम घर की चारदीवारी और अभिभावकों की छत्रछाया से परे हटकर स्वयं पर आते हैं| यह दुनिया हमारी अपनी है, सिर्फ अपनी.. जहाँ हमने खुद से सब कुछ सीखा.. नए रिश्ते, नए बंधन, समस्याओं का हल खोजा, एंवम जहाँ सब कुछ हमारा खुद का बनाया हुआ है | ऐसे में जब यह सब कुछ छोड़ कर जाना हो... फिर से एक नयी दुनिया बनाने, तो यह एहसास होना लाज़िमी है | आखिर ऐसा क्या है जो हमें इस जगह से जोड़े रखता है ? इसका जवाब तो शायद कोई भी नहीं दे सकता | यूं तो हर याद में सबसे महत्त्वपूर्ण उससे जुड़े लोग होते हैं, पर समय के साथ कब ये निर्जीव इमारतें, मैदान, सड़कें, कितनी भावनाओं के रूपक बन जाते हैं.. पता ही नहीं चलता| इसलिए शायद अब जिधर भी देखो.. यह एहसास मन को कचोटता है कि न जाने यह सब फिर कब दिखेंगे | हालांकि आजकल फेसबुक, जीटॉक के जमाने में सभी से संपर्क में बने रहना तो संभव है, पर जो बात रेड़ी पर पोहे खाते हुए गपशप करने में है वो इन सब में कहाँ |

ख़ैर.... जब नयी मंजिले, नयी राहें, नया सफर आपका आगे इन्तजार कर रहा हो तो पिछले को छोड़ कर आगे बढ़ना तो पड़ता ही है| इन वर्षों में यहाँ जो कुछ हासिल किया है, ज्ञान, अनुभव, यादें वो सब हमेशा साथ रहेगा...

इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है | पिलानी ने जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात सिखाई है वो है अपने सोच के दायरे को असीमित करना | ओएसिस, बॉसम, अपोजी, टेस्टस् , कौम्प्रीज, ट्रीटस् , यह सब जो कि मिल कर बिट्सियन संस्कृति को समृद्ध बनाते हैं. इन्होंने कितना कुछ सिखाया है | भले ही हम इस दौरान इन सभी को कोसते रहें हों, अतिव्यस्तता का रोना रोते रहें हों, समयाभाव से ग्रस्त रहें हों, ... पर सच यही है कि ऐसी ही परिस्थितियों में हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देना आ गया है |

बातों का तो कोई अंत नहीं है | न ही समय का | परन्तु एक कहानी के निर्धारित समय का अंत है| इस कहानी का यहीं तक साथ था| अब नए किरदार होंगे... नई कहानी होगी पर मूल भावना वही रहेगी| अपने सभी मित्रों एंवम् पाठकों का हार्दिक धन्यवाद एवम् आशा है कि हिंदी प्रेस क्लब से आपका जुड़ाव हमेशा बना रहेगा |

वर्षों से जो रहा यह संग......अब वो खोने को है

कल तक था जो आज वो बीती बात होने को है ....

है यह आहट सूर्य की ...या फिर रात होने को है ...

कहीं कहानी खत्म है...या नयी शुरुआत होने है....

लोकेश राज